दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,मद्रास

मई–2009

समय : 10.00 से 1.00 बजे तक

दिनांक :22–05–2009

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

बी.ए तृतीय वर्ष परीक्षा,प्रश्न–पत्र 2

विषय : हिंदी(वैकल्पिक),

शीर्षक : **आधुनिक हिंदी कविता**

समय : 3 घंटे   पूर्णांक : 75

1.निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखिए : 3x10=30

(क) कवि निराला के जीवन एवं कृतित्व का परिचय दीजिए ।

(ख) पंत ने नारी मुक्ति के लिए पुरूष समाज से क्या–क्या करने के लिए कहा है ?पंक्तिया देकर समझाइए ।

(ग) प्रयोगवादी कवि के रूप में अज्ञेय के योगदान पर **नदी के द्वीप** कविता के संदर्भ में प्रकाश डालिए ।

(घ) एक कवि के रूप में मुक्तिबोध की क्या विशेषता है ? मुक्तिबोध की कविताओं के आधार पर विवेचना कीजिए ।

(च) धूमिल के जीवन एवं कृतित्व का परिचय देते हुए **न्यू गरीब हिंदू होटल** में अभिव्यक्त यथार्थ पर प्रकाश डालिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 250 शब्दों में लिखिए : 4x5=20

(क) **'तोडती पत्थर'** का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए ।

(ख) प्रसाद की कविता **'किरण'** के उद्धे य पर प्रकाश डालिए ।

(ग) **'जाग री'** कविता में उपलब्ध प्रकृति के मानवीकरण पर लेख लिखिए ।

(घ) **'गा कोकिल'** कविता से समाज को क्या शिक्षा मिलती है ?

(च) **'मेरे दीपक'** कविता में परपीडा को दूर करने का संकल्प कहाँ–कहाँ व्यक्त हुआ है ।

(छ) **'टेसू'** कविता में ग्रीष्म की तपन का जो वर्णन हुआ है उसकी व्याख्या कीजिए ।

(ज) **'बहुत दिनों बाद'** कविता में कवि ने क्या–क्या अनुभव किए ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

(झ) **'काला तेंदुआ '** कविता में काला तेंदुआ के माध्यम से कवि ने क्या कहना चाहा है ?स्पष्ट कीजिए ।

3. निम्नलिखित पद्यांशों को संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 5x5=25

(क) देखते देखा मुझे तो एक बार

उस भवन की ओर देखा,छिन्नतार;

देखकर कोई नहीं,

देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोयी नहीं,

सजा सहज सितार ;

सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार

एक क्षण के बाद वह कांपी सुघर,

ढुलक माथे से गिरे सीकर

लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा–

'मैं तोडती पत्थर ।'

अथवा

अलसता की सी लता

किंतु कोमलता की वह कली

सखी नीरवता के कंधे पर डाले बा ह,

छा ह–सी अंबर–पथ से चली ।

(ख) मुक्त करो नारी को, मानव !

चिर बंदिनी नारी को,

युग–युग की बर्बर कारा से

जननि;सखी, प्यारी को!

अथवा

गा,कोकिल बरसा पावक कण !

नष्ट–भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन,

ध्वंस भ्रं ा जग के जड बंधन !

पावक पग धर आए नूतन,

हो पल्लवित नवल मानवपन

(ग) खग–कुल कुल–कुल–सा बोल रहा

किसलय का अंचल डोल रहा ।

लो, यह लतिका भी भर लाई

मधु मुकुल नवल रस–गागरी।

अथवा

तुम असीम, तेरा प्रका ा चिर

खेलेंगे नव खेल निरंतर

तम के अणु–अणु में विद्युत–सा

अमिट चित्र अंकित करता चल,सरस–सरस मेरे दीपक जल,

(घ) हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी की क्रोड में ।

वह बृहद भूखण्ड से हमको मिलाती है ।

और वह भूखण्ड अपना पितर है।

नदी तुम बहती चली ।

अथवा

बहुत दिनों के बाद

अबकी मैंने जी भर भोगे

गंध–रूप–रस ाब्द–स्प र्ा सब साथ–साथ इस भू पर

बहुत दिनों के बाद

(च) चट्टानों पर झिझोड रहा है अपना शिकार

काला तेंदुआ

चट्टानें,चट्टानें नहीं रहीं

तेंदुओं में बदल गई हैं ।

एक तेंदुआ

सारे जंगल को

काले तेंदुए में बदल रहा है ।

अथवा

जब मैं उसे भूख और नफरत और प्यार और जिंदगी

का मतलब बतलाता हू ं और मुझे कविता में

आसानी होती है–जब मैं ठहरे हुए को हरकत

में लाता हू ं–एक उदासी टूटती है,ठंडापन खत्म

होता है और वह जिंदगी के ताप से भर जाता है ।

****